Uploaded the executive summary of the project entitled "**कोंकणी एवं राजस्थानी लोकगीतों में सांस्कृतिक दर्शनः एक तुलनात्मक अध्ययन"(Konkani Evam Rajasthani Lokgeeto mai Sanskrutik Darshan: Ek Tulnatmak Adhyan), UGC Approval No. 23-1158/14(WRO)**

उद्देश्य- इस लघु प्रकल्प के रूप में कोंकणी और राजस्थानी लोकगीतों पर तुलनात्मक अध्ययन करने के मेरे उद्देश्य के पीछे लक्ष्य सिर्फ यही है कि जितना हो सके इस लोक साहित्य के क्षेत्र में अपनी ओर से मैं कुछ योगदान दे सकूँ । मेरा यह अल्प प्रयास है कि मैं भी गिलहरी की तरह इस रामकार्य के माध्यम से समाज का ऋण उतार सकूँ। लोकगीत तो लोकमानस से उपजा हुआ गीत है। जिसे हर लोक का मन गाता है। भारत बहुभाषीय देश है जिसके हर क्षेत्र में संस्कृति की विविधता के हर रंग को हम भलीभाँति देख सकते है । यह लघु प्रकल्प इसी के तुलनात्मक अध्ययन की कोशिश है क्योंकि विविधता के साथ ही हर क्षेत्र की संस्कृति में साम्य भी होता है जो भारत की एकता को लक्षित करती है । " कोंकणी एवं राजस्थानी लोकगीतों में सांस्कृतिक दर्शनः एक तुलनात्मक अध्ययन" इस विषय को लेकर यही दिखाने का प्रयास है तो है ही, साथ ही तुलनात्मक अध्ययन से हम हर एक की तुलना करते हुए उसकी समानता और विषमता का परिचय भी मिलता है । तुलना में हमेशा नीचा दिखाने का प्रयास नहीं होता बल्कि तुलना से हम किस प्रकार अपनी कमतरताओं को दूर कर सकते है इसका प्रयास भी होता है । तुलना से हम अलग- अलग संस्कृति की रूप-रेखा को भलिभाँति समझ सकते है, उसका अध्ययन कर सकते है।

लोकसंस्कृति का रूप व्यापक है । हर एक देश, हर एक राष्ट्र की अपनी एक सांस्कृतिक विरासत है । संस्कृति समाज की सम्यक कृति है । इस संस्कृति का रूप लोकगीतों में दिखायी देता है । भारतीय जनजीवन में लोकगीतों की एक सुदृढ़ सांस्कृतिक लोक परम्परा रही है जो उसके लोकाचारों, लोक संस्कारों में दिखायी देती है। गोवा तथा राजस्थानी लोकगीतों में भी कई समानान्तर अन्तर्धाराएँ सक्रिय रही है। इस प्रकल्प के माध्यम से इसी समानता तथा विशेषता के भाव को दिखाते हुए एकता के सूत्र को उजागर करना मेरा उपक्रम रहेगा । वास्तव में भारत देश बहुत ही व्यापक और विस्तृत है । अनेक भाषाओं, वेशभूषाओं, धर्मों, जातियों तथा अनेक मत-मतान्तर के बावजूद भारतीय मनुष्य की आत्मा एक ही रागात्मक अनुभूति से बँधी हुई है। भाषाभेद होते हुए भी लोकगीतों से भरा भारतीय मानव हृदय की आस्था-विश्वास, सुख-दुःख की भावना आदि का स्वरुप एक ही है । अलग-अलग दिखती नदियों की तरह संस्कृति के विविध रूपों का समाहार भारतीय संस्कृति रूपी सागर में होता है । तुलनात्मक

अध्ययन के जरिए हम दो अलग भाषीय राज्यों के सामाजिक जीवन, तथा उसकी संस्कृति के स्वरूप को भलिभाँति जान सकते है । तुलनात्मक अध्ययन से विभिन्न भाषाओं की शब्द संपदा, भाषा शैली, वाक्य रचना, अलंकरण, नवीन अनुभूति एवं उनकी प्रादेशिक विशिष्टता को समझा जा सकता है तथा उसे ससृध्द और सुदृढ़ बनाया जा सकता है । आज आधुनिकता, भूमंडलीकरण, तकनीकी क्रान्ति के कारण लोकसंस्कृति को विद्रुप ढंग से पेश किया जाता है । वर्तमान दौर में समस्त भारतवर्ष जातिय, क्षेत्रिय, धार्मिक, साम्प्रदायिक अहंकार से ग्रस्त हुआ है जिसकी वजह से सारे भावबोध में अलगाव दिखायी देता है । ऐसे में तुलनात्मक अध्ययन के महत्व को समझा जा सकता है ताकि राष्ट्रीय संकल्पना को आधार मिले । आदान-प्रदान की क्रिया से अनेकता में एकता की भावना को बल मिलता है, जो केवल मानव व्यौपार तक सिमित नहीं रहता बल्कि लोक की धारणाओं, सामाजिक आचार-विचारों, लोकगीतों, भाषिक विशिष्टताओं में भी होता है । तुलनात्मक अध्ययन से उस विशिष्ट भौतिक जीवनपध्दति का परिचय मिलता है । धर्म, तत्वज्ञान सम्बन्धी दृष्टिकोण व्यक्त होता है । संस्कृति, समाज के साथ साहित्य का संबंध, मानवीय कल्पना, बौध्दिक इतिहास आदि का ज्ञान होता है । तुलना से विभिन्न भाषाओं एवं विविध साहित्य रुपों में विद्यमान सांस्कृतिक,राष्ट्रीय एकता के सूत्रों का पता चलता है । हमारे सृजनात्मक भाव का विकास होता है तथा सांस्कृतिक विरासत को नये रूप में प्रस्तुत किया जाता सकता है । आज के वैश्विकरण के दौर में इस प्रकार के अध्ययन के जरिए हम इस उद्देश्य को पा सकते है । आज देखा जाए तो समस्त विश्व में एक अलगाव -सा आ गया है । प्रान्तगत की भावना के रहते हम मनुष्यता के भाव को भूला बैठे है । इसप्रकार का अध्ययन हम में समानता, एकता और प्रेम का भाव पैदा कर सकता है । संस्कृति के रूप अनेक हो लेकिन कहीं- न- कहीं उसका मूल एक है इसकी पहचान हमारी संस्कृति कराती है । इस संस्कृति को फिर हरा- भरा बनाने में कई सारी संस्थाएँ कार्य कर रही है । इसके अलावा ग्राम जीवन व्यतीत करनेवाला हर व्यक्ति अनायास इस परंपरा का वहन तो कर ही रहा है और जतन भी । बल्कि शहरों में बसनेवाला जन जीवन अपने तौर-तरीकों से इस संस्कृति के बीज को नयी भूमि में उपजाने में अपनी भूमिका का निर्वाह भी कर रहे है । भले ही कालानुसार मूल संस्कृति का रूप उनमें दिखायी न देता हो, लेकिन आधुनिकता की होड़ में जीता मानव नये स्वरूप में संस्कृति का पालन करता नजर आता है । चाहे वह रिमेक्स के रूप में हो, या उनपर फिल्मों का, या पाश्चात्य जीवनशैली का प्रभाव पड़ा हो । हमारे लोकगीतों की धून बड़े-बड़े महानगरों, शहरों में बसनेवाले के मन को छूती है । उन के मन में अपनी मिट्टी की याद को ताजा तो कराती है । और क्यों न हो, लोकगीत मानव हदय, संवेदनाओं को रस से निचोड़ कर उपजा है । इन में लोकमन की हँसी, वेदना, करूणा, उमंग सबकुछ समाया है जो सुननेवाले के मन को मोह लेते है । सामान्य जन में एक

कहावत है – 'ओल्ड इज गोल्ड' पुराना ज्ञान, पुरानी परंपरा, आस्था, विश्वास, रीति-रिवाज, वेश- भूषा, खान-पान सब कुछ आज भी भारतीय जीवन और भारतीय संस्कार के अजोड़, अमिट रूप है। जो सजीव है और इसलिए आज भी भारतीय जीवन में अहम स्थान रखते है।

लोक साहित्य के एक पहलू को लिखित रूप से संजोकर रखने का यह योगदान इस लक्ष्य की ओर पहला कदम होगा जो लोकसाहित्य की धरोहर को बनाये रखने की चाह रखते है ।। क्षेत्रगत बिखरा यह ग्रामीण लोकगीत अपने मौखिकता में सदियों से समाज में प्रचलित रहा है। लेकिन कालचक्र के चलते और समाज की अंधानुध पाश्चात्य प्रवृत्ति के प्रति जो आकर्षण है, या जिस प्रकार भाषा में बदवाल आ रहा है। उसे देखते हुए अपने इस आदिम ज्ञान को लिखित स्वरूप में बनाये रखने की आवश्यकता है जो इस प्रकार के लेखन से पूरी हो सकती है।

इस लघु प्रकल्प के माध्यम से दो संस्कृति का अध्ययन तो हुआ ही साथ ही हर संस्कृति के विशेष पहलू और समानता के सूत्र को देखते हुए फिर एक बार ऐसा लगा कि, संस्कृति के ये रंग जरूर अलग- अलग क्षेत्रों में बिखरे पड़े हो किंतु उनका अन्तर्गत स्वरूप एक ही भाव से भरा हुआ नजर आता है। फिर एक बार मनुष्य की यायवार प्रवृत्ति की झलक संस्कृति में झलकती है। आदिम मनुष्य जहाँ- जहाँ घूमे वहाँ- वहाँ उस क्षेत्र के परिवेश, और भौगोलिक रचना के अनुसार संस्कृति तथा आचार- विचार का निर्माण हुआ। इसी के फलस्वरूप आज भारतीय संस्कृति के इंद्रधनुषी रंग दिखायी देते है। इस अलग – अलग संस्कृति के कुछ रूप कोंकणी तथा राजस्थानी लोकगीतों के माध्यम से अध्ययन करने का मौका मिला यह खुशी की बात मानी जायेगी।

शोधसार - "कोंकणी एवं राजस्थानी लोकगीतों में सांस्कृतिक दर्शनः एक तुलनात्मक अध्ययन" के विषय पर शोध के दरम्यान ऐसे कई लोकगीत सामने आये जिनमें काफी हद तक समानता के भाव नजर आ रहे थे। उदाहरणतः कोंकणी लोकगीतों में विवाह संस्कार के अवसर पर मंडप में जो दिया लगाते है उस गीत में दिया बनाने की प्रक्रिया का वर्णन होता है। लोकगीतों का अध्ययन करते वक्त ऐसा ही गीत सामने आया और मैं चकित हो गयी। अनेकता में एकता के यह रंग फिर एकबार महसूस हुए। लंबे भौगोलिक फासलों और भाषा की विभिन्नता के बाद भी संस्कृति के कुछ विधि- विधानों में इतना साम्य मिलता है कि मन आश्चर्य करने लगता है। वही बात कई सारे विधि- विधानों में भी नजर आती है। इस पूरे लघु प्रकल्प के बाद इसके सारांश के रूप में एक बात स्पष्ट हो गयी कि भारतवर्ष की संस्कृति के कई स्वरूप हो सकते है। लेकिन हर समाज की, मानवजीवन की आन्तरिक संवेदनाओं में एकता के भाव दिखायी देते है। हमारी संस्कृति गागर में सागर भरने जैसी है। जिस के नाम, रंग, रूप में विविधता तो नजर आती है पर आत्मा और आन्तरिक भाव एक है।

सामाजिक देन- इस लघु प्रकल्प का पहला योगदान समाज के लिए तो यही होगा कि दो संस्कृतियों के आपसी साम्य तथा उनकी विशिष्टता को लोकगीतों के माध्यम से जाना जा सकता है । दूसरा तुलनात्मक अध्ययन से अध्ययन के नये स्वरूप को जान पायेगे । आज समाज में जो कई विभिन्नता है उसे तुलना से मिटाया जा सकता है । हालाकिं तुलना अच्छी नहीं मानी जाती लेकिन तुलना से दो अलग वस्तुओं की तुलना तो हो ही जायेगी साथ ही अच्छे – बुरे का पत्ता भी लगेगा । तुलना से दो के बीच की दूरियों को कम कर सकते है । आज जिस भूमंडलीकरण के दौर से मानव जो गुजर रहा है तुलनात्मक अध्य़यन के माध्यम से उन तत्वों को समझ सकेगे, उनका ज्ञान हासिल होगा । आपसी दुरिया कम हो जायेगी, एक- दूसरे के प्रति सदभाव जागेगा । तुलना से हम अलग- अलग संस्कृति की रूप-रेखा को भलिभाँति समझ सकते है, उसका अध्ययन कर सकते है । संस्कृति के अलग-अलग रूप लिखित रूप में संजोकर रख पायेगे । एक स्वस्थ और सुंदर संस्कृति सामने आयेगी ।